Date - 3 Feb 2022

होयसल मंदिर

- हाल ही में केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने होयसल मंदिरों के पवित्र स्मारकों को वर्ष 2022-2023 के लिए 'विश्व विरासत स्थल' के रूप में नामित किया है।
- 12वीं-13वीं शताब्दी में बने होयसल मंदिरों को कर्नाटक में बेलूर, हलेबिडु और सोमनाथपुर के तीन घटकों द्वारा चिह्नित किया गया है। ये तीन होयसल मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के संरक्षित स्मारक हैं।
- होयसल के पवित्र स्मारकों को 15 अप्रैल 2014 से यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल किया गया है और यह भारत की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण है।
- इससे पहले यूनेस्को के वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर (डब्ल्यूएचसी) ने भारत के 'यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स' का हिंदी विवरण अपनी वेबसाइट पर प्रकाशित करने पर सहमति जताई थी।

बेलूर, हलेबिडु और सोमनाथपुरा मंदिरों की विशेषताएं:

चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर:

Yojna IAS

- यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जिन्हें 'चेन्नकेशव' के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है 'सुंदर' (चेन्ना) और 'विष्णु' (केशव)।
- मंदिर के बाहरी भाग पर बड़े पैमाने पर नक्काशीदार पत्थर विष्णु के जीवन और पुनर्जन्म और महाकाव्यों – रामायण और महाभारत के दृश्यों को दर्शाते हैं।
- हालांकि यहां शिव से जुड़े कुछ मंदिर भी मौजूद हैं।

होयसलेश्वर मंदिर, हलेबिड:

- हालेबिड में होयसलेश्वर मंदिर वर्तमान होयसालों की सबसे अनुकरणीय वास्तुकला है।

- यह 1121 ई. में होयसल राजा विष्णुवर्धन होयसलेश्वर के शासनकाल के दौरान बनाया गया था।
- शिव को समर्पित यह मंदिर दोरासमुद्र के धनी नागरिकों और व्यापारियों द्वारा प्रायोजित और निर्मित किया गया था।
- यह मंदिर दीवार से जुड़ी 240 से अधिक मूर्तियों के लिए सबसे प्रसिद्ध है।
- हलेबिड में चारदीवारी वाला परिसर है जिसमें होयसल काल के तीन जैन मंदिर भी हैं।

केशव मंदिर, सोमनाथपुरा:

- सोमनाथपुरा में केशव मंदिर एक और शानदार (शायद आखिरी) होयसल स्मारक है।
- जनार्दन, केशव और वेणुगोपाल के इन तीन रूपों में भगवान कृष्ण को समर्पित एक सुंदर त्रिकूट मंदिर है।
- दुर्भाग्य से यहां मुख्य केशव मूर्ति गायब है और जनार्दन और वेणुगोपाल की मूर्तियां क्षतिग्रस्त हैं।

होयसल वास्तुकला की विशेषताएं क्या हैं?

- होयसला वास्तुकला 11वीं और 14वीं शताब्दी के बीच होयसल साम्राज्य के तहत विकसित एक स्थापत्य शैली है, जो ज्यादातर दक्षिणी कर्नाटक क्षेत्र में केंद्रित है।
- होयसल मंदिर हाइब्रिड या बेसरा शैली के अंतर्गत आते हैं क्योंकि उनकी अनूठी शैली न तो विशुद्ध रूप से द्रविड़ियन है और न ही नागर।
- होयसल मंदिरों का मूल द्रविड़ मूल भाव है, लेकिन मध्य भारत में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली भूमिजा पद्धति, उत्तरी और पश्चिमी भारत की नागर परंपराओं और कल्याणी चालुक्यों द्वारा समर्थित कर्नाटक द्रविड़ पद्धति से मजबूत प्रभाव दिखाती है।
- होयसल वास्तुकारों ने इसलिए अन्य मंदिर प्रकारों में मौजूदा संरचनाओं पर विचार किया और, चयन करने और उचित संशोधन करने के बाद, इन शैलियों को अपने स्वयं के विशेष नवाचारों के साथ मिश्रित किया।
- यह पूरी तरह से अभिनव 'होयसला मंदिर' शैली के उद्भव में परिणत हुआ।

Yojna IAS

- होयसल मंदिरों में स्तंभों वाले हॉल के साथ एक साधारण आंतरिक हॉल के बजाय एक केंद्रीय स्तंभित हॉल के चारों ओर समूहित कई मंदिर होते हैं, और पूरी संरचना एक जटिल रूप से डिज़ाइन की गई तारा आकार की होती है।
- चूंकि ये मंदिर स्टीटाइट चट्टानों से बने हैं, जो अपेक्षाकृत नरम पत्थर है, इसलिए कलाकार मूर्तियों को जटिल रूप देने में सक्षम थे। यह विशेष रूप से मंदिर की दीवारों को सजाने वाले देवताओं के आभूषणों में देखा जा सकता है।

विश्व धरोहर स्थल के बारे में:

- यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) द्वारा सूचीबद्ध विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के स्थलों को विश्व धरोहर स्थल के रूप में जाना जाता है।
- विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत 1972 के संरक्षण पर कन्वेंशन के तहत साइटों को "उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य" के रूप में नामित किया गया है।
- वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर इस कन्वेंशन के संचालन के लिए सचिवालय के रूप में कार्य करता है।
- यह दुनिया भर में उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के प्राकृतिक और सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण को बढ़ावा देता है।
- इसमें तीन प्रकार के स्थल शामिल हैं: सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित।
- सांस्कृतिक विरासत स्थलों में ऐतिहासिक इमारतें, शहर के स्थल, महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल, स्मारकीय मूर्तिकला और पेंटिंग कार्य जैसे धोलावीरा एक हड़प्पा शहर शामिल हैं।
- प्राकृतिक विरासत स्थल उन प्राकृतिक क्षेत्रों तक सीमित हैं जिनमें उत्कृष्ट पारिस्थितिक और विकासवादी प्रक्रियाएं, अद्वितीय प्राकृतिक घटनाएं, दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियों के आवास आदि हैं। उदाहरण: ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क संरक्षण क्षेत्र।
- मिश्रित विरासत स्थलों में प्राकृतिक और सांस्कृतिक महत्व दोनों के तत्व होते हैं। उदाहरण: खांगचेंदज़ोंगा राष्ट्रीय उद्यान।
- भारत में विश्व धरोहर स्थलों की संख्या: भारत में कुल 40 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें 32 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और एक मिश्रित स्थल शामिल हैं। हाल ही में एक हड़प्पा शहर धोलावीरा को जोड़ा गया है।
- नामांकन प्रक्रिया: यूनेस्को के परिचालन दिशानिर्देश, 2019 के अनुसार, अंतिम नामांकन डोजियर के लिए विचार किए जाने से पहले किसी भी स्मारक/स्थल को एक वर्ष के लिए अस्थायी सूची में रखना अनिवार्य है।
- एक बार नामांकन हो जाने के बाद, इसे वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर (WHC) को भेजा जाता है, जो एक तकनीकी परीक्षा आयोजित करता है।
- एक बार सबमिशन किए जाने के बाद, यूनेस्को मार्च की शुरुआत में फिर से संपर्क करेगा। इसके बाद सितंबर/अक्टूबर 2022 में साइट मूल्यांकन होगा और जुलाई/अगस्त 2023 में डोजियर पर विचार किया जाएगा।

Yojna IAS

भारतीय तटरक्षक

- भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) ने 01 फरवरी, 2022 को अपना 46वां स्थापना दिवस मनाया।
- ICG की स्थापना अगस्त 1978 में तटरक्षक अधिनियम, 1978 द्वारा भारत के एक स्वतंत्र सशस्त्र बल के रूप में की गई थी।
- विश्व में चौथे सबसे बड़े तटरक्षक बल के रूप में, भारतीय तटरक्षक बल ने भारतीय तट की सुरक्षा और भारत के समुद्री क्षेत्रों में नियमों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पृष्ठभूमि:

- यह रक्षा मंत्रालय के तहत कार्यरत एक सशस्त्र बल, खोज और बचाव और समुद्री कानून प्रवर्तन एजेंसी है।
- इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।
- आईसीजी के गठन की अवधारणा 1971 के युद्ध के बाद अस्तित्व में आई।
- रुस्तमजी समिति द्वारा एक बहुआयामी तटरक्षक बल के लिए एक दूरदर्शी खाका तैयार किया गया था।
- प्रभावी कमान और नियंत्रण के लिए, भारत के समुद्री क्षेत्रों को पांच तटरक्षक क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जिसमें उत्तर-पश्चिम, पश्चिम, पूर्व, उत्तर-पूर्व और अंडमान और निकोबार शामिल हैं, जिनका मुख्यालय क्रमशः गांधीनगर, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और कोलकाता में है।

कार्य:

- तस्करी को रोकना: ICG के प्राथमिक कर्तव्यों में से एक समुद्री मार्गों से तस्करी को रोकना है।
- सन्निहित क्षेत्र और विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) सहित भारत के क्षेत्रीय जल पर इसका अधिकार क्षेत्र है।
- यह भारत के समुद्री क्षेत्रों में समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है और भारतीय जल में तेल रिसाव की प्रतिक्रिया के लिए प्राधिकरण के साथ समन्वय कर रहा है।
- नागरिक सहायता: इसने अपने विभिन्न अभियानों के दौरान अब तक लगभग 13,000 नागरिकों को बचाया है। हाल ही में महाराष्ट्र, कर्नाटक और गोवा में बाढ़, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी नागरिकों को सहायता प्रदान की।
- यह एक मजबूत तटीय सुरक्षा तंत्र स्थापित करने के लिए केंद्र और राज्य एजेंसियों के साथ निकट समन्वय में काम कर रहा है।
- समुद्री सुरक्षा: यह अंतरराष्ट्रीय समुद्री अपराधों का मुकाबला करने और अपने अधिकार क्षेत्र के साथ-साथ हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा बढ़ाने के लिए समुद्रतटीय देशों के साथ सहयोग करता है।

Yojna IAS

- सागर और नेबरहुड फर्स्ट की नीति के तहत, आईसीजी ने महासागरों में वाणिज्यिक संबंध विकसित किए हैं और महासागर शांति की स्थापना के लिए हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ संबंध स्थापित किए हैं।
- आपदा प्रबंधन में भूमिका: आईसीजी ने प्रमुख पारिस्थितिक आपदाओं के दौरान सफलतापूर्वक सुरक्षा प्रदान की है और इस क्षेत्र में 'प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता' के रूप में उभरा है।
- उदाहरण के लिए, आईसीजी ने हाल ही में "सागर रक्षा-द्वितीय" के श्रीलंकाई तट से रासायनिक वाहक एमवी एक्स-प्रेस पर्ल को डुबो कर एक गंभीर पारिस्थितिक आपदा को सफलतापूर्वक टाल दिया।

'बम चक्रवात'

- हाल ही में 'बम साइक्लोन' पूर्वी अमेरिका से टकराया, जिससे परिवहन की समस्या पैदा हो गई।

बम चक्रवात:

- बम चक्रवात एक तीव्र मध्य-अक्षांशीय चक्रवात है, जिसके केंद्र में निम्न वायुदाब होता है और खराब मौसम और बर्फीले तूफान से लेकर भारी तूफान और भारी वर्षा तक कई मौसम पैटर्न की विशेषता होती है।
- बम चक्रवातों को पूर्वानुमानकर्ताओं द्वारा हाई अलर्ट पर रखा जाता है क्योंकि यह बहुत हानिकारक प्रभाव पैदा कर सकता है।

उत्पत्ति का कारण:

- यह तब बन सकता है जब ठंडी हवा का एक समूह गर्म हवा के द्रव्यमान से टकराता है, जैसे कि गर्म समुद्री जल के ऊपर की हवा। इस तेजी से मजबूत होने वाली मौसम प्रणाली का निर्माण एक प्रक्रिया है जिसे बॉम्बोजेनेसिस के रूप में जाना जाता है।
- यह तब बनता है जब मध्य अक्षांश का चक्रवात तेजी से बढ़ता है और 24 घंटों में कम से कम 24 मिलीबार कम हो जाता है।
- 'मिलीबार' वायुमंडलीय दबाव को मापता है।

एक बम चक्रवात तूफान से कैसे भिन्न होता है?

- तूफान उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बनते हैं और गर्म महासागरों द्वारा संचालित होते हैं। इस कारण ये गर्मी के मौसम में काफी आम हैं, क्योंकि इस दौरान समुद्र का पानी गर्म होता है।
- बम चक्रवात आमतौर पर सर्दियों के दौरान आते हैं, क्योंकि ये चक्रवात ठंडी और गर्म हवा के मिलन के कारण बनते हैं। गर्मियों के दौरान आमतौर पर पूरे वातावरण में अधिक ठंडी हवा नहीं होती है; इसका मतलब है कि तब बम साइक्लोन होने की संभावना बहुत कम होती है।

Yojna IAS

- तूफान उष्णकटिबंधीय जल में बनते हैं, जबकि बम चक्रवात उत्तर-पश्चिमी अटलांटिक, उत्तर-पश्चिमी प्रशांत और कभी-कभी भूमध्य सागर के ऊपर बनते हैं।

सेवा ई-स्वास्थ्य सहायता और दूर-परामर्श (SeHAT)

- रक्षा मंत्रालय **(MoD)** ने सेवा ई-स्वास्थ्य सहायता और टेलीकंसल्टेशन **(SeHAT)** नामक एक ऑनलाइन चिकित्सा परामर्श मंच के माध्यम से सेवानिवृत्त सैनिकों और सेवा कर्मियों को सेवाएं प्रदान करने के लिए दवाओं की होम डिलीवरी सेवा शुरू की है।

सेहत पहल

- यह सभी पात्र सैनिकों और उनके परिवारों के लिए डिज़ाइन की गई रक्षा मंत्रालय की तीन शाखाओं की एक टेली-परामर्श सेवा है।
- डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस के लिए सरकार की प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में, रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने **27** मई, **2021** को सेहत का शुभारंभ किया।
- इसका उद्देश्य मरीजों को उनके घरों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है।
- सेहत स्टे होम ओपीडी ई-संजीवनी की तर्ज पर सभी नागरिकों के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) द्वारा संचालित एक मुफ्त ओपीडी सेवा पर आधारित है।
- सेहत स्टे होम ओपीडी (सेहाटोपीडी) एक मरीज से डॉक्टर की प्रणाली है जहां मरीज इंटरनेट के जरिए दूर से ही डॉक्टर से सलाह ले सकता है।

Swadeep Kumar

Yojna IAS